पंजाबी लोक गीतों में त्यौहार

डॉ. सोनदीप मोंगा
एसिस्टैंट प्रोफैसर, पंजाबी विभाग, सरकारी कालेज, रोपड़

लोक गीत किसी समूह की लोक मानसिकता की अभिव्यक्ति हैं और त्यौहार उसी सामूहिक मानसिकता की खुशी का प्रतीक। किसी भी प्रदेश अथवा समूह के मन के बारे में उनके त्योहारों के माध्यम से जाना जा सकता है इन अवसरों पर गाए जाने वाले लोक गीत इनकी रूह माने जा सकते हैं जो इनकी मानसिक तरंगो को पिरो कर इन त्योहारों की परंपरा रचते हैं और अगली पीढ़ी इनके द्वारा ही त्योहारों का महत्व समझती है। वास्तव में लोक गीत किसी जाति के अंतीव भावनाओं और मनोभावों को प्रकट करते हैं जिनको त्योहार जैसे हालात एक स्वाभाविक वातावरण प्रदान करते हैं, जिनमें से सारी जाति की प्रतिष्ठा और प्रतिभा के दर्शन होते हैं, क्यों कि त्योहार किसी विशेष क्षेत्र की सभ्यता का सही दर्पण होते हैं जिसमें से वहां के लोगों की रीति रस्म, रिवाज, आदर्श, उमगें दिखाई पड़ती हैं।

पंजाब मेलों और त्योहारों का प्रदेश है। पंजाबी लोग खुशदिल होते हैं जो अपनी प्रत्येक रीझ को इन अवसरों के तौर पर मनाते हैं। प्रकृति की ऋतु – परिवर्तन भी पंजाबियों का त्यौहार है। जिन्दगी के इन खुशहाल पलों को पंजाबीयों ने अपने लोक गीतों में भी पेश किया है, ऐसे भी कहा जा सकता है कि त्योहार मनाने के लिए पंजाबियों ने लोक गीत रच लिए। पंजाबियों के बहुत सारे त्योहार जैसे लोहड़ी, बिसाखी, तीआं (तीज) लोक गीतों के बिना अधूरे हैं यह भी कहा जा सकता है कि यह त्योहार लोग गीतों के साथ ही मनाए जाते हैं।

डा. नाहर सिंह लिखते हैं 'व्यक्तिगत रचना 'लोक' तब ही बनती है जब इस को समूह अपनी प्रवानगी दे कर अपना लेता है। इस से आगे चल के समूह की प्रमाणिकता इसके चरित्र को सामूहिक भावी, सामाजिक और परम्परामुख बनाती है, वहां यह मुल तोर पे स्वतंत्र रचना भी है यहीं से बात व्यक्ति से सामुहिक सांझ की और प्रस्थान करती है।[1]

पंजाबी त्योहार इसी सांझ की बात पाते हुए एक लम्बी मौखिक परम्परा सृजन करते है जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है। पंजाबियों का जीवन इन त्योहारों में ही धड़कता हुआ इनकी सांस्कृतिक पहचान बनाता आज विश्वव्यापी हो गया है। यहां के कई त्योहार लोग गीतों के सहित पूरे विश्व भर में मनाए जाते हैं जैसेः

लोहड़ी

यह पंजाबियों का प्रसिद्व त्यौहार है। इसका सम्बन्ध ऋतु परिवर्तन के साथ भी है और दुल्ले भट्टी की ऐतिहासिक गाथा के साथ भी है। पंजाब में लोहड़ी का त्यौहार एक प्रसिद्व लोग गीत के आधार को सामने रख कर मनाया जाता है जो इसके इतिहास को बयान करता है–

सुन्दर मुन्दरीए – हो
तेरा कोण वेचारा – हो
दुल्ला भट्टी वाला – हो
दुल्ले धी व्याही – हो
सेर शकर पाई – हो
कुड़ी दे बोझे पाई – हो
कुड़ी दा लाल पटाका – हो
कुड़ी दा सालु पाटा – हो
सालु कोण समेटे – हो2

इस लोक गीत की दास्तान एक गरीब परिवार के घर हर्ष उल्लास लाने के साथ जुड़ी हुई है जो एक उपकार करने वाले इन्सान की याद दिलाती है।

इस त्यौहार को देसी महीने पोह के अंतले दिन मनाया जाता है। भाई काहन सिंह नाभा लोहड़ी के त्यौहार के बारे में लिखने हैं, 'लोहड़ी शब्द का आरम्भ पुराने रिवाज़ तिल–रोड़ी के साथ सम्बन्ध रखता है जिस अनुसार लोहड़ी वाले दिन तिल और रोड़ी (गुड़) हवन किये जाते हैं और खाए जाते है।[3] इस त्यौहार को विशेषकर परिवार के नववैवाहित दम्पति और नए जन्मे शिशु की खुशी मनाने के लिए रिश्तेदारों, मित्र जनों और गली मुहल्ले वालों को घर पर बुला कर दावतें दी जाती हैं। बहिन को अपने भाई के घर लड़का होने की कितनी खुशी होती है इसको प्रकट करने के लिए वह लोहड़ी के मौके पर उससे गहने मांगती हुई गीत गाती है–

टिक्का करा दे वीरा टिक्का करा दे वे .....
जे बल पैंदा वीरा मोती जड़ा दे वे .....
मैं प्रदेसण वीरा, कद – कद कहण वे हो ..

हर पंजाबी इन विशेष अवसरों के बिना भी इस त्यौहार को एक महातम के तौर पर मनाते हैं। कड़ाके की ठंड के बार सुहानी ऋतु के स्वागत के साथ नए खाने भी स्वादिष्ट लगते हैं जो बच्चों को आशिर्वाद के तौर पर सभी गांव वालों की तरफ से प्राप्त होते हैं। इसमें जाति धर्म का कोई भेद भाव नहीं होता। बूढें, नौजवान, औरत, मरद, बच्चों सभी के लिए यह एक खुशी का अवसर है। इस दिन

शाम को सभी घरों के बच्चें, घरों से खाने का सामान बटोरते और सामूहिक जश्न में शामिल होते हैं। उनके मुख पर विभिन्न प्रकार के गीत होते हैं। लड़कियों की टोली का गीत कुछ ऐसे होता हैः

ऊखली' च रोड़े। वीर चड़ेया घोड़े, घोड़े
वीरा तेरी पग्ग वे, सुच्चा मोती लग वे, लग वे,
सुच्चा मोती ढ़ै पिआ, राजे दे दरबार पिआ, दरबार पिआ
राजे दी बेटी सुत्ती ऐ, सुत्ती ऐ
सुत्ती न् जगा लिआ, जगा लिआ
रत्ते डोले पा लिआ, पा लिआ
रत्ता डोला चीकदा चीकदा, भाबो त् उड़ीकदा, उडीकदा, उड़ीकदा
भाबो कुच्छड़ गीगा गीगा, इह मेरा भतीजा, भतीजा
लोहड़ी वई लोहड़ी, भाई देउ लोहड़ी...[5]

इस तरह लडके गांव के कुछ और बोली गाते और रंग जमाते हैं –

'आखो मुडियो वंजली .... वंजली
वंजली छांटा लम्बीयां .... वंजली
मींह पए कनकां लम्बीयां .... वंजली
लोहड़ी वई लोहड़ी, देउ गुड़ दी रोड़ी
दे माई पाथी, तेरा पुत्त चड़ेगा हाथी
दे माई लोहड़ी, तेरा पुत्त चड़ेगा घोड़ी।[6]

यह गीत पंजाब के मालवे के इलाके में सुप्रसिद्व और लोकप्रिय है। दुआ और चावों से भरे यह गीत सिर्फ खैर मांगने तक ही सीमित नहीं बल्कि इनमें पंजाबियों की फिराकदिली और दानी स्वभाव का भी जिक्र है क्योंकि यह त्यौहार गांवों में ज्यादा प्रचलित है। दुकान वाले बाणिये को भी इस दिन दान देना होता है। यही बच्चे उस बाणीए से दुकान पर जा कर मज़ाक करते हुए गा कर मांगते हैः–

कोठी विच कटोरा, असीं गुड़ नहीं लैणा थोड़ा
कोठी विच किल्ला, असीं गुड़ नही लैणा गिल्ला
कोठी विच आला, असीं गुड़ नहीं लैणा काला।[7]

फिर पाथियां इक्ट्ठी करके गांव के बीच लोहड़ी जला ली जाती है और रात को जलती लोहड़ी पर औरतें तिल और गुड़ डाल कर गाती हैः–

इश्र आ दलिद्र की जड़ चुल्ले पा .....
मच्च मच्च लोहड़ीए, तैनु तिलां दे फक्के.....[8]

इस का भाव अर्थ है कि यह त्योहार लोगों को सन्देश दे रहा कि सर्दी की ऋतु के बाद आलस छोड़कर अपने काम में लग जाओ। गीत इस त्योहार का विशेष भाग हैं यह त्योहार गीतों के साथ ही आरम्भ होकर गीतों के साथ ही समाप्त हो जाता है।

बिसाखी

बिसाखी पंजाबियों का विरासती त्योहार है। यह पंजाबियों के किसानी जीवन पर केन्द्रित है और नौज़वानों की मेहनतकशी का जश्न है क्योंकि यह धरती शूरवीरों की धरती है और जब किसान खेतों में बिखरे हुए सोने रूपी गेंहूँ (कणक) को काट कर घर ले के आता है तो उसकी खुशहाली और अच्छी आर्थिकता का अवसर बनता है। इसी खुशी को वह पारिवारिक और सभी को सांझे जश्न का रूप दे देता है। इस मेहनत की सफलता उसे मस्त कर देती है और वह 'बल्ले–बल्ले' और 'शावा–शावा' की हुक लगाता, जीवन संघर्ष के प्रति उल्लास से देखता है। भांगड़ा करता हुआ वह ढ़ोलक की आवाज़ को आकाश तक पहुँचा देता है और वैसाख महीने की सुहावनी ऋतु में चारों और सरूर छा जाता। इनके द्वारा गाए जाने वाले लोक गीतों का विषय देश निर्माण और देश प्रेम होता है। कहीं घर की औरतों का योगदान भी याद किया जाता है और उनके नाम पे बोलीयां डाल के अपनी खुशी का इजहार किया जाता हैः

पहले नम्बर ते निकली केसरी, नरम रही कर्तारी
उह दे उत्तों दी हो गई बचनो, लोहड़े करे कमारी।
कुड़ती हेठ दी जाकट रखदी, नन्दो शुकीनण भारी
कुड़ीयां ने कठ कर लिया, फिर धन कुर विऊतें जाली
भागी दा रंग पीला सुणींदा, लालीदार सुनियारी
विच्चों बीही दे निकलीयां चारे, जिवें तुरदे मल्ल खिडारी
हथाँ दे विच्च सोहण रूमाल, जिउं नौकर सरकारी।
निउं के चुक पठिआ, गेंद घुंघरूआं वाली .....[9]

पंजाब का यह त्योहार अपनी लोक धुनों के द्वारा शहीदों को श्रद्वांजलि देने का भी पवित्र दिन, खालसा पंथ की स्थापना के शुभ दिवस और मात् भाषा पंजाबी के राज तिलक का भी दिन है। यह त्यौहार खेतों में फसल समेट कर आर्थिक पक्ष से खुशहाल होने का शुभ याद करवाता है।

तीआं (तीज)

पंजाब में तीआं औरतों का एक विशेष त्यौहार है जिसको लोकगीतों के साथ ही मनाया जाता है और पंजाबी लोक गीतों में भी इस त्यौहार का ज़िक्र बखूबी मिलता है। ज्ञानी गुरदित सिंह लिखते

हैं 'पंजाब के हरेक पिंड (गांव) में तीआं (तीज) या सावियां (हरियाली) का त्यौहार धुम–धड़ाके के साथ मनाया जाता है। तीआं जैसा के नाम से प्रकट होता है, गर्मी के बाद सावन की बारिश के साथ सुखी धरती पर हरियाली उपजती है। सावन की 'तीज' को 'तीआं' का आरम्भ होता है जो 15 दिन तक मनाया जाता है। तीआं के अवसर पर लड़कियों का ससुराल से मायके आने का रिवाज पुराना है।[10] काहन सिंह नाभा इस त्योहार के बारे में लिखते हैं कि 'तीआं का अथ्र है तीज। सावन शुदी तीन को यह त्योहार शुरू होकर पूर्नमाशी तक रहता है। पूर्णिमां वाले दिन बल्लो पड़ती है इस दिन सभी लड़कियां आती है। संसकृत ग्रन्थों में इस त्योहार को 'तृतीय' कहा गया है।[11] यह त्योहार भी ऋतु परिवर्तन का ही सूचक है। पूरे पिंड (गांव) की प्रकृति मानों इन मुटिआरों के संग इस त्योहार में शामिल होती है। पिंड के टोभे के किनारे मुटिआरों की पंजेबें छनकती है। सग्गी फूल चमकते है और मीठी टकोरों जैसे लोग गीतों द्वारा लोक धुनों का मेला सा लग जाता है। पिंड का बरोटा भी मुटिआरों की पींघ के साथ झूमता है जब गीतों की ताल के साथ शाखाएं और पत्ते भी खड़कते है। तो सावन की सुहावनी ऋतु मोर की पैलों, काले बादलों के साथ बारिश की फुहार और मायके आने की छूट सब मिलके इस को मन भावन त्योहार बनाते है।

इस अवसर पर बहनों को उनके भाई मायके लाते हैं। इस लिए इस त्योहार के कई दिन पहले ही भाई की राह देखी जाती है। भाई के आते ही बहन का हाल चाल पुछना भी गीतों में बांधा गया है जैसेः–

'सावण आया नी ससीए सावण आया
इक तां आया मेरा अम्मी दा जाया
चड़दे सावण मेरा वीर नी आया, आ जा वे वीरा
सस निनाण मुख मोड़िया
आ जा वीरा चड़ उच्ची अटारी
मेरे कान उसारी
दे जा वीरा मेरी मां दे सुनेहड़े।
मां तां तेरी भैणे पंलघ बैठाई, पलंघो पीड़े बठाई
साथ अटेरन सुही रंगली राम
आ वे वीरा चड़ीए उच्ची अटारी
मेरे कान उसारी, मेरी भाबो दे देह सुनेहड़े राम।
भाबो तां तेरी बीबा गीगड़ा जाया
नी तेरा भतीजड़ा जाया

उठदी बहंदी दिन्दी लोरीयां राम।[12]

वीर के आने की तैयारी में 'ससुराल' बेगाना देस लगता है क्योंकि पहले पंजाबी औरत का जीवन ससुराल और मायके के ताने–बाने में ही निहित होता था। मायके जाने का ख्याल ही उसके लिए त्योहार जैसा था। तीज का त्योहार उसके लिए यही अवसर लेकर आता था और कभी किसी बहन का भाई न लेने आए या जिनका भाई न हो वह लोक गीतों के द्वारा भाई प्राप्ति की दुआ मांगती हैं इस सभी विषयों से सम्बंधित लोक गीत पंजाब में प्रचलित हैं जैसेः–

– जांदे वीर दा बोता सिआता आउंदे वीर दा खेस
वीरा मैनु लै चल वे खड़ी बैगाने देस
– बहुतियां भरावां वालीए, तैनु तीआं नु लैण नहीं आए
सस्से बघिआड़ मुहींए, तैथों डरदे लैण नी आए।
– केरां आ वे भैण दे बिहड़े, तैनु देखे चंद चढ़ जे
वीर मेरिआ अम्मा दिआ जाएआ, तैंनु देखे चंद चढ़ जे,
– भैणां रोंदीयां पिछोकड़ खड़ के, जिनां दे घर वीर नहीं
इक वीर देई वे रब्बा, सोंह रवाण नु बड़ा चित्त करदा
– दो वीर देईं वे रब्बा, मेरी सारी उमर दे मापे।[13]

जब दुलारा भाई तीज के त्योहार के लिए लेने आ जाता है तो बहन भाई को लोक गीतों के द्वारा कई कई उपमाएं देती। भाई के प्रेम की यह अनुठी मिसाल बनती है वह उस से कई उम्मीदें भी रखती हैंः–

अडड़ी मारे मदरस्सा खोले
वीर मेरा पतला जेहा
वीर मेरा नी गुलाबी फुल्ल वरगा
धुप विच भों मिणदा
पम्गां खटट्ीयां ते वेरवण जटट्ीयां
दोवें वीर घोड़ीयां उत्ते
पग्गां खटट्ीयां ते वेखण जटट्ीयां
ओह वीर मेरा कुड़ीओं।
मेरा वीर नी जमाती धाणेदार दा
सम्मां वाली डांग रखदा
तैनु वेख के भुख्खी रज्ज जावां
सुन्दर स्रूप वीरना

जिथे वजदी बदल वांग गजदी
काली डांग मेरे वीर दी।[14]

इस लिए भाई बहन के घर 'संधारा' ले के जाता है जिसमें कुछ सामान जैसे कुड़ती, गुड़, शकर, एक सोने का गहना होता है जब वो उसे मायके लाता है। मायके पहुँच के तीज वाले दिन अपने बचपन की यादें ताजा कर लेती हैं। इस दिन सभी मुटिआरों ने रंग बिरंगे कपड़े पहने होते हैं। उनकी गोटे किनारी वाली चुनरीयां, सग्गी फुल्ल, घाघरे, पीपल के पेड़ पे डाली पींधे, एक अनोखा सा दृष्य पेश करते हैं। वह वहां इक्ठठी होकर गिद्दा (पंजाब की औरतों का प्रसिद्व लोक नाच) डालती है। उनकी रंग बिरंगी चूड़ीयां और चुनरीयां इन्द्र देव के अखाड़े का काल्पनिक चित्र पेश करती लगती है। उनके लोक गीतों का मन भावन विषय सावन मास ही होता हैः

रुत्त सावण दी, दिन गिद्दे दे, कुड़ीया रलके आईयां
नचण कुदण खुशी मनावण बड़िया घरां दीआं जाईयां
गिद्दा पा रहीयां नणदां ते भरजाईयां। गिददा ..... [15]

इस गिददे में पंजाबी औरत अपने सारे दुखों को मनोवैज्ञानिक तौर पर बाहर निकालती, अपने को बेहतर महसूस करती है। अपनी गृहस्थी का सारा रोना वो यहां लोक गीतों के माध्यम से रो सकती है। इसलिए इस सामूहिक नाच गिद्दे को पंजाबी मुटिआर के दुखों की सुनवाई की हाई–कोर्ट भी कहा गया है। वास्तव में पंजाबियों का यह त्योहार खुशियों से भरा, गुस्से मलारों को निकालने का और जीवन के लिए फिर से तरो–ताजा करने वाला है। लोक गीत ही इस त्योहार का विधि विधान है और इसको सफल बनाते हैं।

सांझी का त्योहार

सांझी देवी का त्योहार भी लड़कियों का त्योहार है जो दशहरे के दिनों के आसपास मनाया जाता है। यह अस्सु महीने के पहले नवरात्रे से शुरू होकर दशहरे वाले दिन तक मनाया जाता है। कहते हैं कि 'सांझी माता' एक कुआंरी देवी हैं जिसको एक अच्छे वर की प्राप्ति के लिए पूजने की मान्यता है पहले नवरात्रे से एक दिन गली मुहल्ले की लड़कियां इक्ठ्ठी होकर सांझी माता के लिए चीकणी मिट्टी के गहने बनाती है। मिट्टी के बर्तन, चकला बेलन, तवा परांत आदि भी बनाए जाते है। सूरज, चन्द्रमा और तारों की आकृतियों भी बनाई जाती हैं। लड़कियां अपने अनुसार सांझी माई की प्रतिमा भी बनाती है। पहले नवरात्रे वाले दिन इस की पूजा का प्रशाद बनाया जाता है जो कि आटे को भून कर गुड़ शक्कर को मिला कर बनाते हैं। इसी तरह सांझी माई की पूजा के समय लड़कियां कई गीत गाती हैं जैसेः

उठ मेरी सांझी, सांझी पटड़े खोल
कुड़ीयां आईयां तेरे कोल
जाग सांझी जाग
तेरे मथथे आया भाग
तेरे पट्टीयां सुहाग
सांझी कुड़ीऊ पहाड़ बसदी
राजे राम दी पोती
लैण क्यों नी जांदा
भाई मोधना वे।[16]

इसी तरह नई ऋतु की आमद के साथ नए चाव और कल्पनामई कला के सुमेल से यह त्योहार लोक गीतों संग मनाया जाता है।

करवा चौथ

करूए का व्रत 'करवा चौथ' के नाम से वैसे तो पूरे भारत में मनाया जाता है, पर पंजाब में इसको बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। नव–विवाहित पंजाबी मुटिआरों का यह प्यारा त्योहार है। यह त्योहार दुश्हरे से बाद कार्तिक मास के पिछले पक्ष की चौथ को मनाया जाता है। इस त्योहार में पूरा दिन पति की लम्बी उम्र के लिए व्रत रखा जाता है और फिर करवे में पानी पिला कर पति यह व्रत खुलवाता है। इसलिए इसको करवा चौथ का व्रत कहा जाता है। कई बार लड़कियां काम काज़ की थाकन से बचने के लिए मायके जाकर भी यह त्योहार मनाती है। इस त्योहार पर भी भाई ही बहन को लेकर आता है इस सम्बन्ध में लोक गीत भी प्रचलित हैंः–

गड्डी जोड़ के मम्गां लीं मेरे वीरना
करूआं दे वरतां न्।[17]

इस व्रत के महत्व के बारे में कई कथांए प्रचलित हैं। सुबह के समय सर्गी खाकर यह व्रत रखा जाता है और सूर्य अस्त के आस–पास सभी औरतें इक्ठ्ठी होकर करवे में खाने पीने का सामान एक दूसरे के साथ बांटती है और यह लोक कथा के आधार पर लोक गीत गाती हैं जो इस प्रकार हैंः–

लै भाईआं दी भैण करवड़ा
लै सरब सुहागण करवड़ा
करवड़ा बटाईया
जींवदा झोली पाया
कतीं न अटेरीं न
वाहण पैर पाई न

सुत्ते नु जगाई न।[18]

इस दिन सभी औरतें सभी तरह के श्रृंगार करके समय बिताती हैं और शाम को बाद में चांद निकलने पर व्रत खोलती हैं। इसके चांद की प्रतिक्षा में ही कई लोक गीत बन जाते हैं:

चन्द चड़िया माए
इहनां किकरां दे उहले।[19]

इस तरह यह त्योहार भी लोक समूह की सांस्कृतिक और सामाजिक ताने बाने का प्रतीक है। हर जाति का भंडार लोक गीतों के मोतियों के साथ भरा पढ़ा हैं। चाहे वह जाति आदिम अवस्था से गुजर रही हो और चाहे सांस्कृतिक तौर पर विकसित हो चुकी हो। जिन जातियों के रहन सहन के ऊपर नई वैज्ञानिक सभ्यता का प्रभाव नहीं पढ़ा होता, उनके लोक गीतों का भंडार बड़ा विशाल और निर्मल होता हैं।

शहरों में लोक गीत मर रहे हैं, पर गांवों में अभी भी लोक गीतों के लिए वातावरण अनुकूल है, लोक गीतों में नई जिन्दगी धड़क रही हैं। शहरों में लोगों की मानसिक प्रवृत्तियों और रूची बदल गई हैं। वह रेड़िओ और फिल्म संगीत के अधिक दिलदार हो गए है। अब तो गावों में भी यह धुनें प्रचलित होने लगी हैं और लोकगीतों की बलवान धड़कनें मध्यम पड़ने लगी हों इस अवस्था में आवश्यकता है कि लोप हो रही विरासत को सम्भाल लिया जाए।[20]

विद्वान पुष्टी करते हैं कि लोक गीत महाकाव्य के नित बदलते अन्नत प्रवाह में मानवी मन के चेतन अवचेतन अवस्थाओं के रूप चित्र हैं। जो इस महासत्य के वाहक है कि मनुष्य का अनुभव वतर्मान के प्रत्क्षय हाथों से खिसककर अतीत के कलावे में सुरक्षित रहता है और दोबारा वही अनुभव को अंगीकृत करते हुए वर्तमान के पटल पर गूंज उठता है, कोई न कोई लोक गीत जिसका मुख हमेशा भविष्य की और होता है।[21]

पंजाब की सांस्कृतिक विरासत को संजोने वाले त्योहार जब तक हैं तब तक आशा है कि इनके साथ सम्बन्धित लोक गीत भी जींवत रहेंगे क्योंकि आज भी इन त्योहारों को पंजाब में सांस्कृतिक ढ़ंग से ही मनाया जाता है।

सहायक स्रोत

1. डा. नाहर सिंह, कालियां हिरनां रोहीएं फिरना, पब्लीकेश्न ब्योरो, पंजाबी युनीवरसिटी पटियाला, 1998, पृष्ठ 42.
2. सुखदेव माधपूरी, लोक गीतां दी समाजिक ब्याखिया, चेतना प्रकाशन, पंजाबी भवन, लुधियाना, 2003, पृष्ठ 151.
3. भाई काहन सिंह नाभा, गुरशब्दरतानकर महान कोश, भाषा विभाग पटियाला, 1930, पृष्ठ 3219

4. महेन्द्र सिंह बिरदी, मालवे दा लोक साहित इक आलोचनात्मक अध्ययन, पब्लीकेशन ब्योरो, पंजाबी यूनीवरसिटी, पटिआला, 2000, पृष्ठ 114
5. वही, पृष्ठ 113.
6. वही, पृष्ठ 114
7. वही
8. वही
9. वही, पृष्ठ 117
10. ज्ञानी गुरदित्त सिंह, लोकधारा दी भूमिका, डा. भुपेन्द्र सिंह खहरा, डा. सुरजीत सिंह (संपाः) पब्लीकेश्न ब्योरो, पंजाबी यूनीवरसिटी पटियाला, 2009, पृष्ठ 28.
11. भाई काहन सिंह नाभा, गुरशब्दरतानाकर महान कोश, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, 1930, पृष्ठ 1775.
12. डा. भुपेन्द्र सिंह खहरा, डा. सुरजीत सिंह, लोकधारा दी भूमिका, पब्लीकेशन ब्योरो पंजाबी युनीवरसिटी पटियाला, 2009, पृष्ठ 37.
13. वही
14. वही, पृष्ठ 33
15. देवेन्द्र सत्यार्थी, गिद्दा, दिल्ली, 1964, पृष्ठ 146
16. सुखदेव माधपुरी, लोक गीतां दी सामाजिक ब्याखया, चेतना प्रकाशन पंजाबी भवन लुधियाना, 2003, पृष्ठ 141
17. वही– पृष्ठ 157
18. वही– पृष्ठ 159
19. वही–
20. डा. सोहिन्द्र सिंह वणजारा बेदी, पंजाबी लोकधारा, विश्वकोश, भाग–8, नैशनल बुकशाप, दिल्ली, 2006, पृष्ठ 2052
21. महेन्द्र सिंह रंधावा, देवेन्द्र सत्यार्थी, पंजाबी लोक गीत, साहित्य अकादमी दिल्ली,1999, पृष्ठ 16.